मन का प्रतिबिम्ब

शिखा वार्ष्णेय

मन के प्रतिबिम्ब

शिखा वार्ष्णेय

समर्पण

समर्पित हर उस शै को,

जो शामिल है

किसी न किसी रूप में,

मेरे वजूद में

-शिखा वार्ष्णेय

चीखते प्रश्नों के उत्तर तलाशती कविताएँ

हर सच्ची कविता सवाल खड़े करती है और उसके उत्तर भी तलाशती है। लेकिन इधर जो कविताएँ लिखी जा रही हैं उनमें अधिकांश खुद एक प्रश्न-सी नजर आती हैं। क्योंकि वे कहना क्या चाहती हैं, पाठक समझ ही नहीं पाता। ऐसी दुरूह कविताएँ समय से संवाद नहीं कर सकतीं। कविता कला है मगर वह कला के व्यामोह में अपनी अस्मिता से दूर न हो जाए। कविता अपनी छवि चमकाने का साधन न बने, वरन् वह लोक मंगल के लिए प्रतिबद्ध रहे। शिखा की कविताएँ लोक जागरण के निकट हैं और समकालीन समय में खड़े अनेक प्रश्नों पर भी विमर्श करती हैं। एक सक्रिय सृजनधर्मी के रूप में मैंने शिखा को देखा है। उनके ब्लॉग के माध्यम से उनका बहुआयामी लेखन ध्यान आकर्षित करता है। शिखा ने गद्य के साथ-साथ अपने पद्य को भी साधने की कोशिश की है और बेहतर कोशिश की है। इधर लिखी जा रही कविताओं में जो एक ठंडापन दीखता है, वह शिखा की कविताओं में नहीं है। इसमें उष्मा है, जागरण की ललक है और बेबाकी के साथ सच कहने का साहस भी है।

शिखा की समस्त कविताओं पर बात करने के लिए सुदीर्घ समय चाहिए, वह किसी के पास नहीं है, लेकिन कुछ कविताओं पर चर्चा की जा सकती है। ये वे कविताएं? जो शिखा के कवि रूप का सार्थक दर्पण हैं। शिखा की कुछ कविताएँ मुझे खास प्रिय हैं, उन पर कुछ बात करूँगा।

'चीखते प्रश्न' कविता में शिखा अपने भारत से निराश है। इसलिए वे कहती हैं-"कैसे कहूँ मैं भारतीय हूँ क्यों करूँ मैं गुमान" सचमुच ऐसा क्या रह गया है इस भारत में कि इस पर गर्व किया जाए? देश में भ्रष्टाचार, बलात्कार, और अनेक तरह के अपराध फैलते जा रहे हैं। समाधान का कोई रास्ता नजर नहीं आता। अतीत तो स्वर्णिम रहा, महान रहा, मगर वर्तमान कैसा है, यह भी देखा जाना चाहिए। कवयित्री को भारत को लेकर कोई भ्रम नहीं है। वह आदर्शवादी बन कर भारत का गुणगान नहीं करती वरन् जो विसंगतियाँ सामने हैं, उन पर चर्चा करती है। जब तक हम देश के हालात नहीं समझेंगे, समाधान की पीठिका तैयार नहीं हो सकेगी। लेकिन शिखा निराश नहीं है, वो 'उम्मीदों के सूरज' को तलाश लेती हैं।

'पुरानी कमीज' कविता रूमानी दुनिया में ले जाती है, मगर यह रूमान चलताऊ किस्म का नहीं है। इसमें

प्यार का समर्पण है। आस्था है। प्यार कमीज नहीं है कि उसे बार-बार बदला जाए, प्यार आत्मा का हिस्सा है जो खाल की तरह शरीर का हिस्सा बना रहता है। इसीलिए शिखा पुरानी कमीज को प्रतीक बना कर कहती है कि कमीज तो बदली जा सकती है मगर प्रेम नहीं बदला जाता। पुरानी कमीज के बहाने शिखा उस रिश्ते की बात करती हैं जो पुराना हो कर भी पुराना नहीं पड़ता। हर पल नवीन बना रहता है। यह देखने वाले की अपनी दृष्टि भी होती है। पुरुष भले ही रिश्ते को पुरानी कमीज समझ कर किसी खूँटी से टाँग दे, मगर स्त्री के लिए रिश्ता एक सुगंध की तरह आत्मा का हिस्सा बन जाता है। वह पुरातन में भी नवीनता का संस्पर्श देती है और अपने प्यार को ताजगी से भर देती है।

स्त्री की अस्मत के सवाल को शिखा कुछ अलग तरीके से देखने की कोशिश करती हैं। किसी स्त्री की इज्जत लुट गई तो इसमें स्त्री का कोई दोष नहीं। उसे जूझना होगा भविष्य से इसलिए कवयित्री सौदा नामक रचना के माध्यम से आहत स्त्री मन में हौसला भरने का काम करती है। क्योंकि स्त्री ज्वाला का रूप ले रही थी 'झुका कर निर्दोष पलकें, भी क्या जीना? और नम आँखों में आखिर उसने सूर्य की सारी रक्तिमा समेट ली थी अपनी हाथ की कोमल रेखाएँ, अपनी ही मुट्ठी में भींच लीं थीं'। यह समय मुट्ठी भींचने का समय है। तभी उन लोगों से निबटा जा सकता है, जो स्त्री अस्मिता का सौदा करने पर उतारू रहते हैं।

'नानी और मुन्नी' कविता के बहाने कवयित्री बदलती दुनिया के बारे में उन लोगों को समझाना चाहती है जो परिवर्तन को देख-समझ नहीं पा रहे हैं। समय बदला है, सोच बदली है। माध्यम बदल गए हैं मगर मनोरंजन की सोच तो पुरातन ही है। एक छोटी बच्ची के माध्यम से कविता आखिर संप्रेषित होती है और नानी भी इस बात के लिए तैयार हो जाती है कि अब उसे भी अपने चश्मे का नंबर बदलना होगा। क्योंकि जब तक नंबर नहीं बदलेंगे हम नए दृश्य को देख नहीं पाएँगे। इस लिहाज से यह कविता एक तरह का दर्पण भी है जो उन लोगों को दिखाया जा सकता है, जो रूढ़ियों से ग्रस्त हैं।

शिखा 'यूके' में रहती है। लेकिन उनका भारतीय मन महानगरीय चकाचौंध को नहीं देखता, वह भारतीय गाँवों के दर्द को निहारता है, उसे महसूसता है। आज हमारा किसान जिजीविषा के लिए संघर्षरत है। उसकी अपनी समस्या है। अगर पानी न बरसे तो फसल न हो, फसल न हो तो उसका जीवन कैसे चलेगा। इसलिए जब बारिश

होती है तो उसे लगता है यह पानी नहीं 'अमृत रस' है। वर्षा के जल को अमृत रस की उपमा बिलकुल नई है। इस दृष्टि से शिखा को बधाई कि उसने एक अभिनव उपमा गढ़ी। पूरी कविता में किसान के आनंद को शिखा ने मानो अपनी आँखों से ही देखा हो। किसान खुश है,

"देख लहलहाती फसल का सपना

आँखें किसान की भर आईं थीं,

इस बरस ब्याह देगा वो बिटिया,

वर्षा ये संदेशा लाई थी।"

एक सही कविता वही है जो मिट्टी के गीत भी गाए। शिखा की यह कविता अपनी मिट्टी और उसे भाग्यविधाता किसान का जो चित्र खींचती है, वह आम भारतीय किसान का ही सार्थक चित्र है।

शिखा की कविता आत्म संवाद करती है। अपने अस्तित्व के सवाल पर वह गंभीर हो जाती हैं। अस्तित्व का मानवीकरण करते हुए शिखा ने जैसे एक बालक की तरह उसे देखा है जो किसी कोने में चुपचाप पड़ा है। कभी उसे मनाना भी पड़ता है। बहलाना भी पड़ता है। गिर जाता है तो उठाना भी पड़ता है। यह अस्तित्व होता भी ऐसा है। जो उठा लेता उसके पास जीवन भर रहता है, जो लापरवाही करता है, उसका अस्तित्व ही खत्म हो जाता है।

शिखा की अनेक कविताएँ अनेक रंगों से लबालब है। यहाँ कुछ परिहास भी है, कुछ व्यंग्य भी है। कुछ क्षणिकाएँ भी है, जिनमें दर्शन है। ऐसी ही एक क्षणिका जिसने मुझे प्रभावित किया। आपको भी पसंद आयेगी। देखिए-

"तेरे लिए मैं / तेरी उस पसंदीदा टाई की तरह हूँ / जिसे तू हर खास मौके पर गले से लगा लेता है / पर मेरे लिए तू / मेरे सीने से लगी वो चैन है / जिसे मैं कभी खुद से अलग नहीं करती।'

ऐसी अनेक रस-वैविध्य से भरी कविताएँ अब एक पुस्तक के रूप में सामने आ रही है-तो यह हर्ष की बात है। मुझे विश्वास है कि ये कविताएँ पाठकों को न केवल आनंदित करेंगी, वरन कही-कहीं गंभीर विचार के लिए भी बाध्य करेंगी। कविता का लक्ष्य ही यही है कि वह जागरण करे। परिहास भी करे तो केवल परिहास न करे वह झकझोरे भी। शिखा की कविताओं में ये तमाम खूबियाँ है। वह हँसाती भी है, रुलाती भी है। वह बेचैन करती

है, सोने नहीं देती। शिखा निरंतर बेहतर कविताओं के साथ साहित्य को समृद्ध करती रहे, यही शुभकामना है।

-गिरीश पंकज

संपादक, सद्भावनादर्पण (मासिक)

अनुक्रम

आखिर	16
नारी	17
अब और क्या?	19
चीखते प्रश्न...	20
प्रलय-....बाकी है?	23
उसका मेरा चाँद	24
सौदा	25
यतीम	27
मैं तेरी परछाई हूँ	29
अमृत रस	31
जा रहे हो कौन पथ पर	33
टप टप टपा टप टप.....	34
पुरानी कमीज	36
ये प्यार है	37
बर्फ के फाहे	38
गूंगा चाँद	39
ख्याली मटरगश्टी	40
मेरा गिरना तेरा उठना	42
ऐ सुनो!	44

नानी और मुन्नी	46
बड़ा हुआ बच्चा	49
अपने हिस्से का आकाश....	51
असमंजस....	53
इक नजर जिन्दगी	55
रिश्ते ...	57
'मैं' बनाम 'हम'	59
ऐसे कुछ पल...	60
ये क्या हुआ....	62
कई बार यूँ भी होता है...	63
जब मौन प्रखर हो	64
पगडंडी की तलाश	66
एक बुत मैडम तुसाद में	67
आज इन बाहों में	68
यही होता है रोज	70
किस रूप में चाहूँ तुझे मैं	71
जाने क्यों	73
करवट लेती जिन्दगी	74
उम्मीदों का सूरज	76
वो निरीह...	78
उलझा सुलझा सा कुछ...	79
जिद्दी कहीं का	81

मुठ्ठी भर रेत	82
सीले सपने	83
तू और मैं...	84
रद्दी पन्ना	86
उड़ान	87
रिक्तता	88
तुझ पर मैं क्या लिखूं माँ	90
पापा तुम लौट आओ न	92
लौट आ	94
जीवन सार	95
मैं हिंदी हूँ	97
क्षणिकाएं	98